



इंडिया कोल्ड चेन कॉन्क्लेव

सन्दर्भ: हिमालय क्षेत्र में हाल ही में आयोजित NCCD का इन्वेस्टिव कोल्ड चेन कॉन्क्लेव जम्मू और कश्मीर के आर्थिक विकास के लिए एक आधार तैयार करता है।

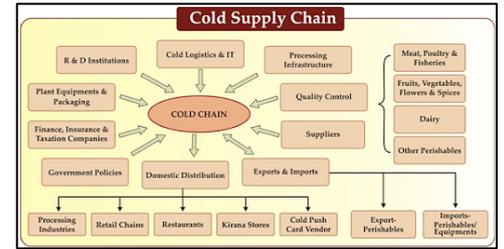
- एनसीसीडी के नेतृत्व में कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर में इंडिया कोल्ड चेन कॉन्क्लेव का आयोजन किया था।
- इसमें ऊर्जा-कुशल और पर्यावरण के प्रति शीतलन समाधानों के महत्व पर जोर दिया गया।
- एनसीसीडी ने कोल्ड चेन हितधारकों को निरंतर समर्थन देने का वादा किया।
- इसकी सफलता का श्रेय JKPICCA, बागवानी निदेशालय, BEE और ISHRAE जैसे भागीदारों के समर्थन को दिया गया।

कोल्ड चेन क्या है?

- कोल्ड चेन एक तापमान-नियंत्रित आपूर्ति श्रृंखला है जिसमें विशिष्ट निम्न तापमान बनाए रखने के लिए प्रशीतित (refrigerated) सुविधाएं और उपकरण होते हैं।
- यह टीके जैसे उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण है जिनके उत्पादन से लेकर उपयोग तक एक सटीक तापमान सीमा की आवश्यकता होती है।
- यहां तक कि संक्षिप्त तापमान विचलन भी टीकों को अप्रभावी और अनुपयोगी बना सकता है।

एकीकृत कोल्ड चेन और मूल्य संवर्धन अवसंरचना

- "एकीकृत कोल्ड चेन और मूल्य संवर्धन अवसंरचना" पहल का प्राथमिक लक्ष्य खेत से उपभोक्ता तक एक निर्बाध कोल्ड चेन नेटवर्क स्थापित करना है, जिससे किसानों के लिए उचित मूल्य और खाद्य उत्पादों की वर्ष भर उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।
- भागीदारी/स्वामित्व वाली फर्म, कंपनियां, निगम, सहकारी समितियां, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी), किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), एनजीओ, केंद्रीय/राज्य पीएसयू और अन्य जैसी पात्र संस्थाएं इस योजना में भाग ले सकती हैं यदि वे योजना दिशानिर्देशों में उल्लिखित पात्रता मानदंडों को पूरा करते हैं।
- इस योजना में संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला में बुनियादी सुविधाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसमें फार्म स्तर पर प्री-कूलिंग, वजन, छंटई, प्रेडिग और बैक्टीरिया सुविधाएं, पैकिंग सुविधाएं, आईक्यूएफ (व्यक्तिगत त्वरित फ्रीजिंग), वितरण केंद्रों के ब्लास्ट फ्रीजिंग, गैर-बागवानी, बागवानी, मछली/समुद्री (झींगा को छोड़कर), डेयरी, मांस और विभिन्न उत्पादों के वितरण के लिए रीफर वैन और मोबाइल कूलिंग इकाइयों साथ ही बहु-उत्पाद/बहु-तापमान शीत भंडारण, सीए भंडारण शामिल हैं।
- यह योजना, परियोजना नियोजन में लचीलापन प्रदान करती है और कृषि स्तर पर कोल्ड चेन बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष जोर देती है।
- यह योजना 2008 से लागू है और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की देखरेख में क्रियान्वित की जा रही है।
- इसमें अनुदान सहायता के रूप में की वित्तीय सहायता, जिसकी अधिकतम सीमा प्रति परियोजना 10 करोड़ रुपये रु देश भर में कोल्ड चेन बुनियादी ढांचे की स्थापना की सुविधा के लिए उपलब्ध है।



झरिया मास्टर प्लान

सन्दर्भ: कोयला मंत्रालय के प्रयासों से झरिया मास्टर प्लान क्षेत्र में चिन्हित सतही अग्नि स्थलों की संख्या 77 से घटकर 27 हो गयी है।

- झरिया कोलफील्ड में कोयला खनन 1916 में शुरू हुआ, जो अवैज्ञानिक प्रथाओं और लाभ-संचालित दृष्टिकोण द्वारा चिह्नित था।
- 1978 में, एक पुलिस टीम और भारतीय विशेषज्ञों ने झरिया में कोयले की आग का अध्ययन किया।
- जांच में बीसीसीएल (भारत कोलिंग कोल लिमिटेड) की 41 कोलियरियों में 77 आग की पहचान की गई।
- इन मुद्दों के समाधान के लिए 1996 में एक उच्च-शक्ति समिति का गठन किया गया था।
- अग्नि प्रबंधन और पुनर्वास पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यापक मास्टर प्लान 1999 में बनाए गए और 2004 में अद्यतन किए गए।

झरिया मास्टर प्लान (जेएमपी) की स्वीकृति:

- झरिया मास्टर प्लान को 2009 में 10 साल की कार्यन्वयन अवधि और 7112.11 करोड़ रु. की अनुमानित निवेश के साथ अनुमोदित किया गया था।
- योजना में पुनर्वास के लिए 25.70 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 595 स्थलों को शामिल किया गया।

कोयला

- कोयला एक जीवाश्म ईंधन है जो तलछटी चट्टानों में पाया जाता है और इसे अक्सर 'काला सोना' कहा जाता है।
- यह एक पारंपरिक ऊर्जा स्रोत है जिसका उपयोग घरेलू तापन, औद्योगिक प्रक्रियाओं जैसे लोहा और इस्पात उत्पादन, भाप इंजन और बिजली उत्पादन (थर्मल पावर के रूप में जाना जाता है) में किया जाता है।
- अग्रणी वैश्विक कोयला उत्पादकों में चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और भारत शामिल हैं।
- भारत में कोयला मुख्यतः दो प्रकार के क्षेत्रों में पाया जाता है: **गोंडवाना कोयला क्षेत्र (लगभग 250 मिलियन वर्ष पुराना) और तृतीयक कोयला क्षेत्र (15 से 60 मिलियन वर्ष पुराना)।**
- गोंडवाना कोयला भारत के कोयला भंडार का 98% और कोयला उत्पादन का 99% हिस्सा है। यह उच्च गुणवत्ता का है और दामोदर, महानदी, गोदावरी और नर्मदा घाटी जैसे क्षेत्रों में स्थित है।
- तृतीयक कोयला क्षेत्र, जो मुख्य रूप से अतिरिक्त-प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं, में कार्बन की मात्रा कम होती है लेकिन नमी और सल्फर का स्तर अधिक होता है। प्रमुख क्षेत्रों में असम, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और केरल शामिल हैं।

भारत में कोयला उत्पादन:

- चीन के बाद भारत विश्व स्तर पर दूसरा सबसे बड़ा कोयला उत्पादक देश है।
- वित्तीय वर्ष 2020-21 में, भारत में कोयला उत्पादन 716.08 मिलियन मीट्रिक टन था, जो मुख्य रूप से COVID-19 व्यवधानों के कारण 2.02% की गिरावट दर्शाता है।
- इसी अवधि में लिग्नाइट का उत्पादन 36.61 मिलियन मीट्रिक टन था, जो पिछले वर्ष से 13.04% कम था।
- पिछले दशक में कोयला उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) 3.19% थी, जबकि लिग्नाइट उत्पादन में 1.60% सीएजीआर की गिरावट आई थी।
- भारत का लक्ष्य 2023-24 तक कोयला उत्पादन को 1,200 मिलियन मीट्रिक टन तक बढ़ाना है।

Face to Face Centres





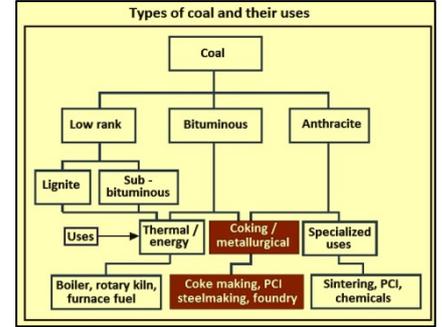
- भारतीय कोयले में कार्बन की मात्रा कम होती है और विषैले तत्व नगण्य होते हैं।
- भारतीय कोयले का सकल कैलोरी मान (जीसीवी) औसतन लगभग 4500 किलो कैलोरी/किग्रा है, जबकि ऑस्ट्रेलिया जैसे कई अन्य देशों में यह लगभग 6500 किलो कैलोरी/किग्रा है।

भारत में कोयले की खपत:

- 2020-21 में 906.08 मिलियन मीट्रिक टन की खपत के साथ भारत वैश्विक स्तर पर कोयले के सबसे बड़े उपभोक्ताओं में से एक है।
- खपत किए गए कोयले का लगभग 79.03% घरेलू स्तर पर उत्पादित किया गया था।
- पिछले दशक में कोयले की खपत 3.96% की सीएजीआर से बढ़ी।
- उच्च मांग और कम घरेलू कोयले की गुणवत्ता के कारण, भारत इस्पात उत्पादन जैसे उद्योगों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कोयले का आयात करता है।
- 2020-21 में भारत ने 215.25 मिलियन मीट्रिक टन कोयले का आयात और 2.95 मिलियन मीट्रिक टन कोयले का निर्यात किया।

कोयले से विद्युत उत्पादन:

- 2020-21 में, भारत के बिजली उत्पादन में कोयले का योगदान 73% से अधिक था, जबकि इस क्षेत्र में लिग्नाइट का योगदान 3.6% था।
- बिजली क्षेत्र भारत में कोयले का सबसे बड़ा उपभोक्ता था, जो 2020-21 में कुल कोयले की खपत का 64.07% था।
- अन्य महत्वपूर्ण उपभोक्ताओं में स्टील, स्पंज आयरन, सीमेंट, उर्वरक, रसायन, कागज और कपड़ा उद्योग शामिल हैं।
- कोयले से चलने वाले बिजली संयंत्र भारत में बिजली उत्पादन का एक प्रमुख स्रोत हैं, लेकिन लागत संबंधी विचारों के कारण नवीकरणीय ऊर्जा में परिवर्तन का प्रस्ताव किया गया है।



गैलेक्टिक ज्वार

सन्दर्भ: हाल ही में एक अनुसंधान के दौरान वैज्ञानिकों ने नोट किया है कि एंड्रोमेडा आकाशगंगा, मिल्की-वे आकाशगंगा की दिशा में आगे बढ़ रही है और इसकी परिधि के साथ घटित होने वाली ज्वारीय धाराओं की भी पहचान की जा चुकी है।

- गुरुत्वाकर्षण बलों के कारण आकाशगंगाओं में ज्वार-भाटा आता है, जिससे उनका विकास प्रभावित होता है।
- ज्वारीय बल आकाशगंगा संरचनाओं को नया आकार देते हैं, तारा निर्माण को बढ़ावा देते हैं और छोटे तारा प्रणालियों को बाधित करते हैं।
- वे लंबी अवधि में तारे की कक्षाएँ भी बदलते हैं और आकाशगंगाओं की परस्पर क्रिया को प्रभावित करते हैं।
- एंड्रोमेडा के पास ज्वारीय धाराएँ बौनी आकाशगंगाओं को निगलने का संकेत देती हैं।
- गैलेक्टिक ज्वार अति विशाल ब्लैक होल और तारों के साथ उनकी अंतःक्रिया को प्रभावित करते हैं।
- आकाशगंगा की गतिशीलता और विकास का अध्ययन करने के लिए आकाशगंगा के ज्वार को समझना आवश्यक है।

गैलेक्टिक ज्वार क्या हैं?

- गैलेक्टिक ज्वार या गांगेय ज्वार मिल्की-वे जैसी आकाशगंगा के भीतर अनुभव की जाने वाली गुरुत्वाकर्षण शक्तियाँ हैं।
- वे गैलेक्टिक टकराव, बौनी आकाशगंगा व्यवधान और सौर मंडल के बादल पर आकाशगंगा के परिदृश्यों को प्रभावित करते हैं।
- बड़ी आकाशगंगाओं के बीच अन्य आकाशगंगाओं के टकराव के परिणामस्वरूप घटित गुरुत्वाकर्षण घटनाओं (मुख्यतः लम्बवत ढाल) के कारण ज्वारीय पूँछें दिखाई देती हैं।
- बड़ी आकाशगंगाओं के निकट छोटी आकाशगंगाएँ ज्वारीय बलों से अत्यधिक प्रभावित होती हैं, जिससे उनकी संरचना, गति और तारे निर्माण की प्रक्रिया प्रभावित होती है।
- ज्वारीय स्ट्रिपिंग से आकाशगंगाओं में तारे-निर्माण और अन्य गैसों की हानि हो सकती है, जो संभवतः शेष कोर क्षेत्रों में तारे के निर्माण को प्रेरित कर सकती है।
- एक बौनी उपग्रह आकाशगंगा अंततः पूरी तरह से विघटित हो सकती है, जिससे उसकी मूल आकाशगंगा के चारों ओर तारों और गैस की एक ज्वारीय धारा बन सकती है।
- गैलेक्टिक ज्वार आकाशगंगाओं के भीतर तारे और ग्रह प्रणाली के निर्माण को भी प्रभावित करते हैं, खासकर बाहरी इलाकों में जहाँ तारे का गुरुत्वाकर्षण कमजोर होता है।
- आकाशगंगा का गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र ऊर्ट बादल को प्रभावित करता है, संभावित रूप से इसे खींचता और विकृत करता है, जिससे ग्रहों का विस्थापन होता है और धूमकेतु का निर्माण होता है।
- गैलेक्टिक ज्वार ग्रहों की कक्षाओं में परिवर्तन करके ऊर्ट बादल के निर्माण में योगदान कर सकता है।
- संघयी रूप से, गैलेक्टिक ज्वार ऊर्ट बादल से धूमकेतु की उत्पत्ति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है।

रोशे सीमा (Roche Limit)

- रोश सीमा, जिसे रोश त्रिज्या के रूप में भी जाना जाता है, आकाशीय अध्ययन की एक अवधारणा है।
- यह एक खगोलीय पिंड से किसी निश्चित दूरी को परिभाषित करता है जहाँ एक दूसरा खगोलीय पिंड, मुख्य रूप से अपने गुरुत्वाकर्षण द्वारा एक साथ रह पाता है।
- रोश सीमा के अंदर, परिक्रमा करने वाली घटनाएं घटित हो जाती हैं और खगोलीय पिंड के चारों ओर छल्ले बनाती हैं।
- इसके विपरीत, रोश सीमा के बाहर, सामग्री एक साथ आने और एकत्रित होने की प्रवृत्ति रखती है।
- रोश त्रिज्या पहले खगोलीय पिंड की त्रिज्या और इसमें शामिल दो पिंडों के घनत्व के अनुपात से निर्धारित होती है।

ऊर्ट बादल (Oort Cloud)

- ऊर्ट बादल, जिसे ओपिक-ऊर्ट बादल (Öpik–Oort cloud) भी कहा जाता है, खगोल विज्ञान में एक सैद्धांतिक अवधारणा है।
- ऐसा माना जाता है कि यह बर्फीले ग्रहाणुओं का एक विशाल संग्रह है जो सूर्य को घेरे हुए है।
- ऊर्ट बादल सूर्य से अत्यंत दूरी पर स्थित है, जो 2,000 से 200,000 खगोलीय इकाइयों (एयू) तक है, यह दूरी 0.03 से 3.2 प्रकाश-वर्ष के बराबर है।
- ऊर्ट क्लाउड की अवधारणा पहली बार 1950 में डच खगोलशास्त्री जान ऊर्ट द्वारा प्रस्तावित की गई थी और इसका नाम उनके सम्मान में रखा गया था।

Face to Face Centres





- ऊर्ट बादल की प्राथमिक भूमिका लंबी अवधि के धूमकेतुओं के स्रोत के रूप में कार्य करना है जो समय-समय पर आंतरिक सौर मंडल में प्रवेश करते हैं।
- ऊर्ट बादल के भीतर दो मुख्य क्षेत्र हैं: आंतरिक ऊर्ट बादल, जो डिस्क के आकार का है और सौर क्रांतिवृत्त (हिल्स क्लाउड) के साथ संरक्षित है तथा दूसरा बाहरी ऊर्ट बादल, जो गोलाकार है और पूरे सौरमंडल को कवर करता है।
- ऊर्ट बादल के दोनों क्षेत्र हेलिओस्फीयर से बहुत दूर स्थित हैं और अंतरतारकीय अंतरिक्ष में मौजूद हैं।
- ट्रांस-नेप्च्यूनियन वस्तुओं के अन्य भंडार जैसे कुइपर बेल्ट, और अन्य खगोलीय पिंडों की तुलना में, ऊर्ट बादल सूर्य से काफी अधिक दूरी पर स्थित है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

नारी अदालत



नारी अदालत के बारे में:

- नारी अदालत, मिशन शक्ति कार्यक्रम का हिस्सा है, जो महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अंतर्गत आता है।
- इसका प्राथमिक लक्ष्य महिलाओं को उत्पीड़न और अधिकारों के उल्लंघन जैसे मामलों को हल करने के लिए एक वैकल्पिक शिकायत निवारण तंत्र प्रदान करना है।
- नारी अदालत ग्राम पंचायत स्तर पर संचालित होती है, जिससे यह स्थानीय समुदायों के लिए सुलभ हो जाती है।
- यह महिलाओं के मुद्दों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है और योजना में सुधार के लिए सार्वजनिक प्रतिक्रिया एकत्र करता है।
- यह महिला कल्याण और सशक्तिकरण के लिए सार्वजनिक सेवाओं की प्रभावी सुपुर्दगी (delivery) सुनिश्चित करने में योगदान देता है।

तिवा जनजाति



तिवा जनजाति के बारे में:

तिवा जनजाति, जिसे लालुंग के नाम से भी जाना जाता है, मुख्य रूप से पूर्वोत्तर राज्यों असम और मेघालय में रहती है, इनकी आबादी अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और नागालैंड में कम है।

मान्यता: तिवा लोगों को असम राज्य के भीतर एक अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त है।

उप-समूह: तिवा जनजाति को दो उप-समूहों में विभाजित किया गया है: हिल तिवा और मैदानी तिवास, प्रत्येक की अलग-अलग सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं।

आजीविका: तिवा लोग डूम की खेती करते हैं।

त्यौहार: तिवा जनजाति कई त्यौहार मनाती है, जिनमें तीन पिसु, बिहू, बोरोट उत्सव, सोगरा फुजा, वानसुवा, जोनबील मेला, काबला फुजा, लैंगखोन फुजा और यांगली फुजा शामिल हैं।

वांचुवा उत्सव: वांचुवा उत्सव तिवा के लिए एक महत्वपूर्ण उत्सव है, जो एक सफल फसल का प्रतीक है।

यांगली उत्सव: यांगली उत्सव बहुत सांस्कृतिक महत्व रखता है क्योंकि यह प्रार्थनाओं और पारंपरिक नृत्यों के इर्द-गिर्द घूमता है, जो खेती पर जनजाति की निर्भरता पर आधारित है।

विश्व कॉफी सम्मेलन



भारत ने हाल ही में, एशिया में पहली बार बेंगलुरु में आयोजित 5वें विश्व कॉफी सम्मेलन (डब्ल्यूसीसी) की मेजबानी की।

स्थापना: इंटरनेशनल कॉफी संगठन (ICO) की स्थापना 1963 में संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में दुनिया भर में कॉफी के आर्थिक महत्व को बढ़ाने के लिए की गई थी।

पिछले संस्करण: विश्व कॉफी सम्मेलन के पहले संस्करण लंदन (2001), ब्राजील (2005), ग्वाटेमाला (2010) और इथियोपिया (2016) सहित विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए गए थे।

शुभंकर: कॉफी स्वामी

थीम: "सर्कुलर अर्थव्यवस्था और पुनर्योजी कृषि के माध्यम से स्थिरता" ("Sustainability through Circular Economy and Regenerative Agriculture")

आयोजक: यह कार्यक्रम विभिन्न हितधारकों के सक्रिय समर्थन से कॉफी बोर्ड, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय और अंतर्राष्ट्रीय कॉफी संगठन (आईसीओ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।

कॉफी निर्यात: भारत का कॉफी निर्यात 1 बिलियन डालर से अधिक का है, जिसमें विश्व कॉफी सम्मेलन (डब्ल्यूसीसी) के कारण 10-15% वृद्धि की सम्भावना है।

कॉफी उत्पादन: भारत मुख्य रूप से रोबस्टा और अरेबिका कॉफी किस्मों की खेती करता है, जिसमें कर्नाटक सबसे बड़ा उत्पादक है, इसके बाद केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश हैं।

विश्व कॉफी बाजार: ब्राजील वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ा कॉफी उत्पादक देश बना हुआ है और भारत अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, रूस और कई देशों को कॉफी निर्यात करता है।

वैश्विक समुद्री भारत शिखर सम्मेलन



वैश्विक समुद्री भारत शिखर सम्मेलन (ग्लोबल मैरीटाइम इंडिया समिट -जीएमआईएस) बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा आयोजित समुद्री क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम है।

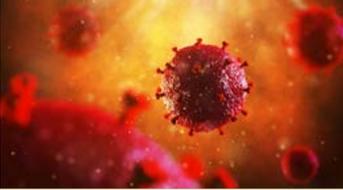
तीसरा संस्करण: जीएमआईएस का तीसरा संस्करण 17-19 अक्टूबर, 2023 को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित किया जायेगा।

उद्देश्य: इसका उद्देश्य प्रमुख निर्णय निर्माताओं और उद्योग के नेताओं के लिए एक अंतरराष्ट्रीय बाजार बनाना, स्टार्ट-अप और शोधकर्ताओं के लिए अवसर प्रदान करना, नवीनतम समुद्री प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन करना तथा समुद्री क्षेत्र में व्यापार करने में आसानी को बढ़ावा देना है।

महत्व: यह राष्ट्रों के बीच व्यापार बढ़ाने, समुद्री क्षेत्र में उपलब्धियों का उत्सव मनाने और कुशल जनशक्ति तक पहुंचने के लिए उद्योग-अकादमिक संवाद की सुविधा प्रदान करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

Face to Face Centres



<p>CE20 E13 इंजन</p> 	<p>इसरो ने हाल ही में महेंद्रगिरि में इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स में CE20 E13 इंजन का हॉट टेस्ट पूरा किया है। इंजन की भूमिका: CE20 इंजन क्रायोजेनिक अपर स्टेज (CUS) के पावरहाउस के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो LVM3 प्रक्षेपण वाहन के ऊपरी चरण (C25) को आगे बढ़ाता है। प्रदर्शन: CE20 इंजन पहले ही अपनी उपयोगिता सिद्ध कर चुका है, इसने लगातार छह LVM3 मिशनों और दो वनवेब वाणिज्यिक मिशनों में 19 टन के श्रस्ट स्तर पर प्रदर्शन किया है। उच्च श्रस्ट: इसके उन्नयन के रूप में, CE20 इंजन को 22 टन के उच्च श्रस्ट स्तर पर संचालित करने के लिए संशोधित किया जाएगा, जिससे समग्र प्रदर्शन में वृद्धि होगी। ऐतिहासिक उपलब्धि: गगनयान कार्यक्रम का परीक्षण वाहन डी-1/क्यू एस्केप सिस्टम मिशन अक्टूबर के लिए निर्धारित है, जो भारत के मानव अंतरिक्ष उड़ान प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम है।</p>
<p>सिट्रान वायरस (ciTRAN Virus)</p> 	<p>सिट्रान वायरस के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> हाल ही में भोपाल में भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) के शोधकर्ताओं ने एक सर्कुलर आरएनए वायरस, सिट्रान की पहचान की है, जिसकी एचआईवी-1 वायरस प्रतिकृति में भूमिका पहले अस्पष्ट थी। सर्कुलर आरएनए जीन अभिव्यक्ति (Regulating gene expression) को विनियमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और विभिन्न जैविक प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक है। यह समझना कि सिट्रान एचआईवी-1 प्रतिलेखन को कैसे नियंत्रित करता है, एचआईवी-1 से निपटने के लिए नवीन दवाओं और उपचारों के विकास को बढ़ावा दे सकता है, जैसा कि साइंस एडवांसेज जर्नल में बताया गया है। शोधकर्ताओं ने एच. आई. वी.-1 प्रतिलेखन टी कोशिकाओं से सर्क आर. एन. ए. को पकड़ने के लिए प्रत्यक्ष आर. एन. ए. नैनोपोर अनुक्रमण (सी. आर. सी. डी. आर.-एस. ई. क्यू.) से जुड़े एक अनुकूलित प्रोटोकॉल का उपयोग किया और सी. आई. टी. आर. ए. एन. की पहचान की। एचआईवी-1 संक्रमण वीपीआर-निर्भर तरीके (Vpr-dependent manner) से सिट्रान अभिव्यक्ति को प्रेरित करता है और सिट्रान सेरीन/आर्जिनिन-समृद्ध स्प्लिसिंग फैक्टर 1 (एसआरएसएफ1) के साथ इंटरैक्ट करता है, जो एचआईवी-1 प्रतिलेखन को दबाने के लिए जाना जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एचआईवी-1 सिट्रान को हाईजैक कर लेता है, जो आम तौर पर इम्यूनोलॉजिकल सिग्नलिंग, सूजन और वायरल संक्रमण के दौरान बदल जाता है।
<p>समाचारों में स्थान</p> <p>अर्जेंटीना</p>	<p>राजधानी: ब्यूनस आयर्स स्थान: अर्जेंटीना दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी भाग में स्थित है और ब्राजील के बाद महाद्वीप का दूसरा सबसे बड़ा देश है। राजनीतिक सीमाएँ: अर्जेंटीना चिली, बोलीविया, पैराग्वे, ब्राजील और उरुग्वे सहित कई देशों के साथ अपनी सीमाएँ साझा करता है। भौगोलिक विशेषताएँ: देश में पर्याप्त भौगोलिक विविधता है, जिसमें इसकी पश्चिमी सीमा पर प्रसिद्ध एंडीज़ पर्वत हैं, लिथियम-समृद्ध खारे पानी के भंडार (lithium-rich brine deposits) के लिए जाने जाते हैं। लिथियम उत्पादन: अर्जेंटीना, चिली और बोलीविया के साथ "लिथियम ट्राइएंगल" का हिस्सा है और लिथियम का एक महत्वपूर्ण उत्पादक है, जो दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा लिथियम रिजर्व रखता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंध: अर्जेंटीना संयुक्त राष्ट्र और G20 का सदस्य है।</p> 

POINTS TO PONDER

- ❖ किस भारतीय सशस्त्र बल ने 'ऑपरेशन सजग' ड्रिल का संचालन किया? - भारतीय तट रक्षक बल
- ❖ प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किस राज्य ने 'मोबाइल वैन कार्यक्रम' शुरू किया? - हिमाचल प्रदेश
- ❖ नॉर्मन बोरलॉग पुरस्कार, 2023 किसे प्रदान करने की घोषणा की गई है? - डॉ. स्वाति नायक
- ❖ हाल ही में कारगिल युद्ध का कौन सा युद्धक्षेत्र पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है? - मुश्कोह घाटी (Mushkoh Valley)
- ❖ बतारवा थान (Batadrava Than) हिंदू धर्म के किस संप्रदाय से संबंधित है और यह कहाँ स्थित है? - वैष्णव धर्म, और असम में स्थित है

Face to Face Centres

